Click www.researchjournal.co.in/online/subdetail.html to purchase.

ARTICLE

ADVANCE RESEARCH JOURNAL OF SOCIAL SCIENCE
| December, 2011 | Volume 2 | Issue 2 | 283-285

भारतीय साहित्य में हिन्दी एवं मलयालम भाषा में पहेलियों का महत्व

■प्रिया जी. एवं के0जी0 प्रभाकरन

KEW WORDS : प्राकृत, अपभ्रंश, पिंगल, अवधी, ब्रजभाषा

How to cite this Article: G., Priya and Prabhakaran, K.G. (2011).Bhartiya Sahitya Mae Hindi Avam Malayalam Bhasha Mae Paheliyaon ka Mahatav, *Adv. Res. J. Soc. Sci.*, **2** (2) : 283-285.

Article chronicle : Received :*03.11.2011*; **Accepted** : *29.11.2011*

हिन्दी भारत की राष्ट्रभाषा है। समस्त उत्तर भारत एवं मध्य भारत के अधिकांश प्रान्तों की भाषा हिन्दी है। हिन्दी भारत की सांस्कृतिक विरासत की प्रतिनिधि भाषा है। प्राकृत, अपभ्रंश, डिंगल, पिंगल, अवधी, ब्रजभाषा से होती हुई खड़ी बोली तक की विकास यात्रा में हिन्दी भारतीय इतिहास, साहित्य एवं संस्कृति की प्रतिनिधि भाषा रही है। हिन्दी के मौखिक साहित्य में पहेली साहित्य का विशेष महत्व है।

मलयालम सुदूर दक्षिण की भाषा है। द्रविड़ भाषा परिवार से उत्पन्न मलयालम दक्षिण की अन्य भाषाओं की अपेक्षा संस्कृत भाषा के अधिक निकट है। संस्कृत के शब्द प्रभूत मात्रा में मलयालम में पाये जाते हैं। हिन्दी में जैसे तत्सम एवं तद्भव शब्दों का भंडार है वैसे ही मलयालम में भी है। हिन्दी के समान मलयालम के मौखिक साहित्य में पहेलियों का अपना महत्व है।

वैदिक काल में अश्व की बलि के पूर्व ब्राह्मण ब्रह्मोदय पूछते थे। आनुष्ठानिक प्रयोग के सन्दर्भ में ब्रह्मोदय पहेली का आदि रूप माना जाता है। पहेली के गूढ़ार्थ व्यंजक स्वरूप के कारण संस्कृत में इसे 'प्रहेलिका' कहते हैं। हिन्दी में पहेली के लिए प्रयुक्त दूसरा शब्द 'बुझौअल' है। अंग्रेजी में इसे 'RIDDLE' कहते हैं। कथन के मूल में निहित रहस्य के कारण इसे 'ENIGMA' भी कहा जाता है। मलयालम में पहेली के लिए प्रयुक्त शब्द 'कटंकथा' है।

पहेली का स्वरूप विश्लेषण अपेक्षित है। पहेली मौखिक साहित्य की एक विधा है। लोकगीत, लोक कथा, वीर गाथा, लोकोक्ति और लोक नाट्य के समान पहेली भी लोक साहित्य की महत्वपूर्ण विधा है। परंपरावाद, सामूहिक प्रज्ञा, अनामत्व, सहजता, सरलता एवं सद्भाव लोक साहित्य के प्रमुख तत्व हैं। वैदिक काल से लेकर आज तक पहेली की परंपरा अक्षुण्ण है। यह लोक साहित्य का अजस्र स्रोत है। महाभारत और जातक कथाओं में पहेली का प्राक् रूप विद्यमान है।

पहेली का संबंध लोक जीवन एवं संस्कृति से है। लोक संस्कृति का गहरा प्रभाव पहेली में दृष्टिगत होता है। मानव के गोत्रीय जीवन में कृषक सभ्यता के भीतर ही पहेली का सर्वाधिक विकास हुआ माना जाता है। ग्रामीण जीवन में ही पहेली बुझाने का शौक रहता था। दादी बच्चों को जैसे कहानियाँ सुनाती थीं वैसे पहेली भी बुझाती थीं। बच्चों को सुलाने का यह भी एक उपाय रहा होगा। बड़ों के बीच जब पहेली बुझाने का विनोद चलता था तब सुलझाने वाले को सही उत्तर नहीं मिलता तो उसे हार माननी पड़ती थी और 'कंट' कहना पड़ता था। सुलझाने वाले के 'कंट' कहने पर पहेली बुझाने वाला सही उत्तर सुनाता था। पहेली में कथा का चमत्कार रहने से उसे 'कंटकथा' कहा जाता था।

विवेच्य साहित्य का सर्वेक्षण :

पहेली मौखिक साहित्य विधा है। यह जनता की जिह्वा पर जीवित रहती आयी है। सभ्यता के विकास क्रम में पीढ़ी दर पीढ़ी अपनी लोक संस्कृति की इस महान धरोहर का

Author for correspondence:
प्रिया जी., शोधार्थिनी, विनायिका मिशन विश्वविद्यालय, सलेम (तमिलनाडु) भारत

Address for the coopted Authors:
के0जी0 प्रभाकरन, शोधार्थिनी, विनायिका मिशन विश्वविद्यालय, सलेम (तमिलनाडु) भारत